COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 15, Issue No: 1, Year: 2024 (January-June)
PP: 19-22
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

प्रेमचंद और रेणु यथार्थवादी साहित्य के दो स्तंभ

पूजा कुमारी
शोधार्थी
रामचन्द्र चन्द्रवंसी विश्वविद्यालय नवडीहकला, बिश्रामपुर, पलामू, झारखंड

प्रस्तावना

प्रेमचंद्र और फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी साहित्य के ऐसे महान कथाकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज के वास्तविक जीवन को अपनी रचनाओं में अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत किया। दोनों लेखको ने साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर समाज परिवर्तन का साधन बनाया । इनके साहित्य में किसान, मजदूर, दलित, स्त्री, शोषित और ग्रामीण जीवन की वास्तविक समस्याएँ दिखाई देती हैं। इसी कारण इन्हें हिंदी के यथार्थवादी साहित्य का आधार स्तंभ माना जाता है।

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद की नींव रखी, जबकि रेणु ने आंचलिक यथार्थवाद को ऊचाईयां प्रदान की। दोनों लेखकों की रचनाएँ भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

यथार्थवाद का अर्थ

साहित्य में यथार्थवाद काअर्थहै, जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं, संघर्षो और सामाजिक सच्चाईयों का चित्रण।यथार्थवाद साहित्य की वह प्रवृत्ति है जिसमें जीवन और समाज का चित्रण कल्पना या आदर्शवाद के बजाय वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर किया जाता है। इसमें सामान्य मनुष्य, उसकी समस्याएँ, संघर्ष, आशाएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ केंद्र में रहती हैं। हिंदी साहित्य में यथार्थवाद का सशक्त रूप प्रेमचंद और रेणु की रचनाओं में दिखाई देता है। यथार्थवादी साहित्य कल्पना की अपेक्षा वास्तविक जीवन को अधिक महत्त्व देता है। दोनों ने अपने साहित्य में

- समाजकी वास्तविक समस्याएँ
- आर्थिक विषमता
- ग्रामीण जीवन
- शोषण
- जातिवाद
- गरीबी

का अत्यंत सजीव चित्रण किया।

प्रेमचन्द का यथार्थवाद

प्रेमचंद ने किसान, मजदूर, दलित, स्त्री और मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। उनका यथार्थवाद सामाजिक सुधार और नैतिक चेतना से जुडा हुआ है, जिसे अक्सर आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहा जाता है। प्रेमचंद्र हिंदी साहित्य में यथार्थवादी परंपरा के प्रवर्तक माने जाते है। उन्होनों भारतीय समाज की पीड़ा और संघर्ष को अपनी कहानियों तथा उपन्यासों में स्थान दिया।गोदान, गवन, रंगभूमिऔर कर्मभूमिजैसी कृतियों के माध्यम से प्रेमचंद ने किसानों, मजदूरों, स्त्रियों और दलितों के जीवन को साहित्य के केंद्र में रखा। उनके साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ–

- सामाजिक शोषण और अन्याय का चित्रण
- किसान जीवन की त्रासदी
- जाति व्यवस्था की आलोचना
- स्त्री जीवन की समस्याएँ
- मानवीय करुणा और नैतिक संघर्ष

होरी और धनिया जैसे पात्र भारतीय किसान जीवन के प्रतीक बन गए हैं। प्रेमचंद ने साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का माध्यम माना।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

प्रमुख कृतियाँ

- गोदान
- कफन
- निर्मला
- गमन
- रंगभूमि
- कर्मभूमि

1. किसान जीवन का चित्रण

प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुआ है। गोदान इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। इसमें होरी जैसे किसान की गरीबी, कर्जऔर सामाजिक शोषण का चित्रण किया गया है।

2. सामाजिक शोषण

प्रेमचंद्र ने जमींदारी प्रथा, महाजनी शोषण तथा जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनकी रचनाओं में समाज के कमजोर वर्ग की पीड़ा स्पष्ट दिखाई देती है।

3. नारी जीवन का चित्रण

उन्होंने महिलाओं की समस्याओं को भी गंभीरता से प्रस्तुत किया। निर्मला में दहेज प्रथा और बैमेल विवाह की समस्या को दिखाया गया है। प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण हिंदी साहित्य की अमूल्य उपलब्धि है। उन्होंने भारतीय स्त्री के दुःख, संघर्ष, त्याग, आत्मसम्मान और सामाजिक चेतना को गहरी मानवीय संवेदना के साथ प्रस्तुत किया। सुमन, निर्मला, धनिया, जालपा और सोफिया जैसे पात्र भारतीय नारी के विविध रूपों के सशक्त प्रतिनिधि हैं। प्रेमचंद की नारी–दृष्टि आज भी सामाजिक समानता और स्त्री–सम्मान की प्रेरणा देती है।

रेणु का यथार्थवाद

रेणु ने स्वतंत्रता–उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन, विशेषकर बिहार के मिथिला और पूर्णिया अंचल की संस्कृति, बोली, लोकगीत और सामाजिक संरचना को अत्यंत जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। उनका यथार्थवाद आंचलिकता से समृद्ध है। फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी साहित्य में आंचलिक यथार्थवाद के प्रमुख लेखक है। उन्होनों बिहार के ग्रामीण जीवन, लोकसंस्कृति और आम जनता केसंघर्ष को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।डंपसं ।मैला आँचल, परती परिकथा, जुलुस, और पंचलाइट के माध्यम से रेणु ने उत्तर बिहार के ग्रामीण जीवन, लोकभाषा, लोकगीत, रीति–रिवाज और जनजीवन को अत्यंत जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। उनकी प्रमुख विशेषताएँ–

- आंचलिकता का सशक्त चित्रण
- लोकभाषा और बोली का प्रयोग
- ग्रामीण संस्कृति का जीवंत वर्णन
- स्वतंत्रता के बाद के सामाजिक परिवर्तन
- लोकजीवन की संवेदनाएँ

रेणु ने गाँव को केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई के रूप में चित्रित किया।

प्रमुख कृतियाँ

- मैला आँचल
- परती परिकथा
- जुलुस
- पंचलाइट

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

आंचलिकता का चित्रण

रेणु के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता आंचलिकता है। रेणु ने गाँव की भाषा, लोकगीत, रीति रिवाज और संस्कृति को साहित्य में स्थान दिया। मैला आंचल हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है। मैला आंचलमें पूर्णिया क्षेत्र के ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्र मिलता है। परती परिकथा में ग्रामीण समाज की समस्याओं का चित्रण है।

1. **ग्रामीण जीवन की वास्तविकता**

   रेणु ने ग्रामीण समाज की गरीबी, बीमारी, अशिक्षा और राजनितिक भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया।

2. **लोक जीवन की संवेदना**

   उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन की खुशीयाँ, दुःख, त्यौहार और संघर्ष अत्यंत जीवंत रूप में दिखाई देते है।प्रेमचंद्र और फणीश्वर नाथ रेणु दोनों लेखकों ने इस संवेदना को अपने साहित्य में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया और हिंदी कथा–साहित्य को जनजीवन की गहरी मानवीय चेतना से समृद्ध किया।

समानताएँ

- दोनों ने ग्रामीण भारत को केंद्र में रखा।
- शोषित और वंचित वर्गों को साहित्य में स्थान दिया।
- लोकभाषा और बोलचाल की भाषा का प्रभावी प्रयोग किया।
- सामाजिक विषमताओं और मानवीय संघर्षों को चित्रित किया।
- साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया।

दोनों साहित्यकारों का योगदान

प्रेमचंद्र और फणीश्वर नाथ रेणु दोनों लेखकों ने साहित्य को समाज से जोड़ा और वास्तविक समस्यायों को सामने रखा। उन्होनों किसानों,मजदूरों,दलितों और गरीबोंकी पीड़ा को साहित्य में स्थान दिया। प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थवाद को स्थापित किया और रेणु ने आंचलिकता को नई पहचान दी। दोनों लेखकों ने साहित्य में मानवता, संवेदना और सामाजिक न्याय की भावना दिखाई देती है।

- हिंदी कथा–साहित्य को यथार्थवादी दिशा प्रदान की।
- उपेक्षित वर्गों को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया।
- ग्रामीण भारत के जीवन–संघर्ष को अभिव्यक्ति दी।
- साहित्य को समाज और जीवन से जोडा।
- मानवीय संवेदनाओं को नई गहराई प्रदान की।
- शोषित और वंचित वर्गों को आवाजदी।
- हिंदी कथा–साहित्य को सामाजिक गहराई प्रदान की।
- बाद की पीढियों के लेखकों को प्रभावित किया।

प्रेमचंद्र और फणीश्वर नाथ रेणु दोनों ने हिंदी साहित्य को नई दृष्टि, नई संवेदना और नई सामाजिक चेतना प्रदान की। प्रेमचंद ने यथार्थवादी साहित्य की आधारशिला रखी और रेणु ने उसे आंचलिक जीवन की रंगीन, जीवंत और बहुआयामी अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार दोनों हिंदी साहित्य के अमर और अनुपम योगदानकर्ता हैं।

उपसंहार

प्रेमचंद्र और फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी साहित्य के ऐसे महान कथाकार हैं जिन्होंने साहित्य को जनजीवन सेजोड़ा। प्रेमचंद ने भारतीय समाज की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया, जबकि रेणु ने ग्रामीण भारत की संस्कृती और लोकजीवन को साहित्य में जीवंत बना दिया। दोनों लेखकों का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। इसलिए इन्हें हिंदी के यथार्थवादी साहित्यके दो प्रमुख स्तंभ कहा जाता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सन्दर्भ सूची

1. गोदान- प्रेमचंद,सरस्वती प्रेस, इलाहावाद पृ.45—60,112—140,210—225।
2. कफन —प्रेमचंद, मानसरोवर भाग—8,हंस प्रकाशन पृ. 75—88।
3. निर्मला— प्रेमचंद, लोकभारती प्रकाशन, पृ.52—96।
4. मैला आँचल —फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ.15—48,120—165,220—248।
5. परती परिकथा —फणीश्वर नाथ रेणु राजकमल प्रकाशन पृ. 80—126।
6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल — हिंदी साहित्य का इतिहास , नेशनल पब्लिकेशन हॉउस पृ. 420—455।

© Copyright @ Authors